

ANTAR RASHTRIYA SAHAYOG PARISHAD BULLETIN

Monthly Newsletter of Indian Council for International Co-operation

Vol. 37 No. 7+8

JULY + AUGUST, 2024

(16 Pages including Cover)

SHRI BALESHWAR AGRAWAL MEMORIAL LECTURE DELIVERED by PROF. DR. DANNY WONG TZE KEN



Left to right –Prof. Gopal Arora, Prof. Dr.Danny Wong Tze Ken, Amb. Virendra Gupta, Prof. Shantishri Dhulipudi Pandit, Shri Shyam Parande, Amb. R. Dayakar

Antar-Rashtriya Sahayog Parishad (ARSP) organized the 4th Baleshwar Agrawal Memorial Lecture on July 20, 2024, at Malaviya Smriti Bhawan in New Delhi. The lecture consisted of two sessions. The first session was focused on 'From Migration to Nationality: Indian and Chinese Diaspora in Malaysia,' while the second session was on the theme of हिन्दी पत्रकारिता : अवसर व चुनौतियाँ.

In his opening remarks, Prof. Gopal Arora emphasized the importance of memorial lecture in commemorating the achievement and contributions of Shri Baleshwar Agrawal, one of the founders of ARSP. He highlighted his significant contributions in the context of the diaspora and journalism.

The welcome address was delivered by Shri Shyam Parande, Secretary General of ARSP. He recalled Baleshwar Agarwal ji for his pioneering contributions to the Indian diaspora and underscored his early efforts in addressing diaspora-related issues. Shri Parande emphasized his pivotal role in founding ARSP and initiating diaspora studies in India. He underlined Indian diaspora's unique ability to integrate into local cultures while preserving Indian traditions, leading to global success and contributions to host countries.

Professor Dr. Danny Wong Tze Ken, Dean of the Department of History and Faculty of Arts and Social Sciences at the university of Malaya,

explored the identities and experiences of diasporic communities, focusing on the Chinese and Indian populations in Malaysia. He highlighted the concept of diaspora, emphasizing the longing to return to one's ancestral homeland, akin to the Jewish expression "See you next year in Jerusalem."

Professor Wong differentiated between "overseas Chinese," who intended to return to China, and "Chinese overseas," like Chinese Malaysians, who settled permanently. He noted the overwhelming growth of China and the contribution of its diaspora. Wong also compared the history of Indian

and Chinese migrations to Malaysia. He discussed how both groups maintained distinct cultural identities and the complexities of integration versus assimilation in Malaysian society.

Professor Shantishri Dhulipudi Pandit, Vice Chancellor, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, began by emphasizing the importance of connecting with international students and educational institutions as crucial partners for the Antar-Rashtriya Sahayog Parishad (ARSP).

She noted the global presence of



Release of Conference Proceedings 'Sun Never Sets on Indian Diaspora'

Indian diaspora, sharing facts about the widespread influence of Indian communities and their visibility worldwide. She mentioned her research on the Tamil god Murugan and his acceptance in Indian and Malaysian societies.

She highlighted the evolution of diaspora studies into an academic discipline and how the efforts of individuals like Baleshwar Agrawal Ji and leaders like Shri Atal Bihari Vajpayee who helped establish it as a key component of India's foreign policy. Professor Pandit also outlined India's current foreign policy approach, which centers on the "three Ds" (Democracy, Development, and Diaspora) and the "four Cs" (Care, Connect, Celebrate, and Contribute) frameworks. These principles guide India's engagement with its diaspora and are instrumental in projecting India's soft power on the global stage.

Professor Pandit expressed her views on the strategic role of Indian diaspora in cultural diplomacy, economic influence, political engagement and people-to-people connections. She pointed out the important contribution of Indian diaspora in the fields of Science, Technology, Engineering, and Mathematics (STEM).

Ambassador Virendra Gupta, President of the ARSP, emphasized the significance of India and China as large nations with considerable

diaspora populations. The Indian diaspora is estimated to be around 35 million and the Chinese diaspora is also substantial in number. He shared a conversation with the Chinese Ambassador in Trinidad in 2001, where the Chinese diaspora was viewed as foreigners, contrasting with India's evolving approach to integrating its diaspora into its foreign policy under Prime Ministers Vajpayee and Modi.

Ambassador Gupta highlighted the diaspora's role in generating remittances, driving investments, facilitating technology transfers, and supporting political engagement, particularly in India. Culturally, the Indian diaspora has played an essential role in promoting India's soft power. However, concerns remain about fully leveraging these resources. He credited Baleshwar Agrawal, the founder of ARSP, for recognizing the emotional connection of the diaspora and establishing the organization to deepen the bond."

In his concluding remarks, Ambassador R. Dayakar, Chairperson of the DRRC of ARSP, emphasized India's approach to its 32 million-strong diasporas, including 10 million in the Gulf, as Indian nationals. Ambassador Dayakar highlighted the historical migration patterns of Indian diaspora in Malaysia and its contrast with the Chinese diaspora's experiences. ■

A.R.S.P. Bulletin

A NEWS & VIEWS MONTHLY
Published Since 1987

EDITOR

Keshav G. Parande
(M): 98113 92777

PRINTER

Avon Printers
D-6, Ranjit Nagar Comm. Complex,
New Delhi-110008
(M): 93123 05230
E-mail: a1printers@gmail.com

PUBLISHER

Keshav G. Parande
Pravasi Bhawan
50, Deendayal Upadhyay Marg,
New Delhi-110002
(M): 98113 92777

CONTACT

Phone (O) : 011 - 4162 8351

E-MAIL

arspindia@gmail.com

WEBSITE

www.arspindia.org

PRICE

Rs. 5/- per copy
Rs. 500/- for Life

चतुर्थ श्री बालेश्वर अग्रवाल स्मृति व्याख्यानमाला



दाएँ से बाएँ - श्री अनिल जोशी, श्री आलोक मेहता, श्री अशोक टंडन, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, श्री श्याम परांडे एवं श्री नारायण कुमार

चतुर्थ श्री बालेश्वर अग्रवाल स्मृति व्याख्यानमाला के द्वितीय सत्र का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद-भारत और वैश्विक हिंदी परिवार के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार, 20 जुलाई 2024 को मालवीय स्मृति भवन में 'हिंदी पत्रकारिता: अवसर और चुनौती' विषय पर किया गया। इस सत्र में हिंदी पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति, उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भविष्य की संभावनाओं पर गहन चर्चा की गई।

इस व्याख्यानमाला में बीज वक्तव्य देते हुए हिंदी के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री आलोक मेहता ने अपने वक्तव्य की शुरुआत बालेश्वर अग्रवाल जी के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों की चर्चा से की। उन्होंने कहा, "मैं बालेश्वर जी के शुरुआती शिष्यों में से एक था। उन्होंने मुझे प्रारंभ में अंशकालीन संवाददाता बनने का मौका दिया और मेरे पत्रकारिता करियर की नींव रखी।"

मेहता जी ने अपने शुरुआती दिनों के अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि कैसे बालेश्वर जी ने उन्हें संवाददाता के रूप में तैयार किया। उन्होंने कहा, "मुझे जो पढ़ाते थे प्रेम भटनागर, जो पीटीआई के प्रमुख संवाददाता भी थे, लेकिन मैं अंशकालीन संवाददाता होते हुए भी हमारी खबरें सबसे पहले दूरदर्शन पर चल जाती थीं।" यह अवसर उन्हें हिंदुस्थान समाचार में मिला था, जिसे बालेश्वर जी ने स्थापित किया था।

मेहता जी ने दिल्ली में अपने कार्य की शुरुआत के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा, "मैंने बालेश्वर जी से कहा कि मैं दिल्ली में काम

करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, 'एक महीने के लिए आ जाओ, काम अच्छे ढंग से किया तो देखेंगे।' आज भी वह पत्र हमारे पास है, और उस समय से लेकर आज तक मैं दिल्ली का होकर रह गया।"

अपने संबोधन में, मेहता जी ने उस समय की पत्रकारिता के सामने आने वाली चुनौतियों का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि "पत्रकारिता आज जितनी चुनौतीपूर्ण है, उस समय भी उतनी ही चुनौतीपूर्ण थी।" उन्होंने तार के माध्यम से खबरें भेजने की कठिनाइयों को रेखांकित किया और इसकी तुलना आज की सोशल मीडिया से की।

उन्होंने स्पष्ट किया कि सोशल मीडिया को मीडिया के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे डिजिटल, प्रिंट और टीवी मीडिया के साथ पूरक के रूप में देखा जाना चाहिए। मेहता जी ने विभिन्न माध्यमों के महत्व पर जोर देते हुए कहा, "मैंने साप्ताहिक, दैनिक और डिजिटल मीडिया में काम किया है। सभी माध्यम महत्वपूर्ण हैं।"

बालेश्वर जी की तकनीकी और सामाजिक दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए, मेहता जी ने बताया कि "बालेश्वर जी इंजीनियर थे, जिन्होंने भारतीय भाषाओं के लिए टेलीग्राम मशीन बनाई। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि वह सिर्फ हिंदी के लिए थी, वह मशीन भारतीय भाषाओं के लिए थी।"

उन्होंने बालेश्वर जी के कठोर व्यक्तित्व के साथ-साथ उनके मार्गदर्शन की सराहना करते हुए कहा, "लोग कहते हैं कि बालेश्वर

जी लोगों को डांट भी देते थे, लेकिन मेरा सौभाग्य है कि मुझे बालेश्वर जी ने कभी नहीं डांटा। एक पेट्टी लेकर दिल्ली आया था और आज दिल्ली का होकर रह गया, यहां बालेश्वर जी का योगदान है।"

मेहता जी ने अपने भाषण का अंत ग्रामीण पत्रकारिता के महत्व पर जोर देकर किया। उन्होंने कहा, "आज की पत्रकारिता को समझने के लिए गांव के लोगों को समझना आवश्यक है। आज भी समाचार पत्र गांव में पढ़े जाते हैं।" उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में पत्रकारिता की संभावनाओं और अवसरों को रेखांकित किया और बालेश्वर जी द्वारा इस दिशा में किए गए प्रयासों की सराहना की।

श्री नारायण कुमार, मानद निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद ने अपने स्वागत भाषण और कार्यक्रम का परिचय देते हुए बालेश्वर अग्रवाल जी के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को रेखांकित किया। श्री कुमार ने बालेश्वर अग्रवाल जी की स्कूली शिक्षा से लेकर BHU तक की यात्रा का जिक्र करते हुए हिंदुस्तान समाचार तक की यात्रा को भी उल्लेखित किया। श्री कुमार ने कहा कि बालेश्वर अग्रवाल जी ने प्रवासियों से संवाद स्थापित करने और भारत को अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे भारत को अपना पहला घर और मॉरीशस को अपना दूसरा घर मानते थे।

श्री कुमार ने बालेश्वर अग्रवाल जी की पत्रकारिता यात्रा को भी रेखांकित करते हुए कहा कि सबसे पहले उन्होंने पटना से 'प्रवर्तक' नामक साप्ताहिक पत्रिका की

शुरुआत की। हिंदुस्तान समाचार में मूलभूत सुधार लाने में बालेश्वर अग्रवाल जी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। उन्होंने पटना में सबसे पहले हिंदी पत्रकारों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया और हिंदी पत्रकारिता को भारत से बाहर नेपाल तक लेकर गए।

श्री कुमार ने व्याख्यान के विषय पर आते हुए कहा कि बालेश्वर अग्रवाल जी के समय में हिंदी पत्रकारिता को लेकर काफी चुनौतियाँ थीं, लेकिन उन्होंने उन चुनौतियों को अवसर में बदल दिया। उस समय ज्यादातर हिंदी अखबारों की खबरें अंग्रेजी अखबारों से अनुवादित होती थीं, जिसे बालेश्वर अग्रवाल जी ने हिंदुस्तान समाचार में दुरुस्त किया। जब किसी भी भारतीय भाषा के लिए टेलीप्रिंटर नहीं था, तो बालेश्वर अग्रवाल जी ने उस समय के संचार मंत्री रफी अहमद किदवई से मिलकर सभी भारतीय भाषाओं के लिए टेलीप्रिंटर की व्यवस्था कराई। बालेश्वर अग्रवाल जी हमेशा व्यक्ति की विशेषता पर ज्यादा ध्यान देते थे, बजाय उसके राजनीतिक विचारों पर।

श्री अनिल जोशी, अध्यक्ष-वैश्विक हिंदी परिवार, ने बालेश्वर अग्रवाल जी का जीवन परिचय देते हुए कहा कि बालेश्वर अग्रवाल जी के दोनों हाथों में दो महत्वपूर्ण चीजें थीं – एक हाथ में डायस्पोरा और दूसरे में हिंदी। उन्होंने हिंदी को लेकर बहुत काम किया। इसी क्रम में उन्होंने पटना से 'चंद्रगुप्त' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया और बाद में 'प्रवर्तक' आदि।

श्री जोशी ने वैश्विक हिंदी परिवार और वैश्विक हिंदी सचिवालय के महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख किया और बताया कि जल्द ही वैश्विक हिंदी परिवार की वेबसाइट भी शुरू होगी, जो हिंदी संबंधी पठन-पाठन और प्रवासी साहित्य का एक बड़ा केंद्र बनेगी।

श्री जोशी ने व्याख्यान के विषय पर आते हुए कहा कि आज की पत्रकारिता में काफी बदलाव आया है। उन्होंने अखबारों, टेलीविजन और आज के सोशल मीडिया की तुलना करते हुए चर्चा की, जिसमें उन्होंने सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर बात की।

श्री सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव-इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने अपने संबोधन में हिंदी पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति

और उसके सामने आने वाली चुनौतियों पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा, "आज का विषय 'हिंदी पत्रकारिता: अवसर और चुनौती' बहुत महत्वपूर्ण है। पहले हिंदी पत्रकारिता अंग्रेजी अनुवाद पर निर्भर रहती थी। फिर एक समय ऐसा आया जब हिंदी पत्रकारिता ने अपनी अलग पहचान बनाई। लेकिन आज फिर से हिंदी पत्रकारिता अंग्रेजी अनुवाद के सहारे चल रही है।"

जोशी जी ने हिंदी पत्रकारिता की मौजूदा स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी में विषय वस्तु की कोई कमी नहीं है, बल्कि मानसिकता की कमी है, जिसके कारण हिंदी पत्रकारिता अंग्रेजी पर निर्भर होती जा रही है। उन्होंने कहा, "हिंदी में विषय वस्तु की कमी नहीं है, बल्कि मानसिकता की कमी है जिससे हम पूरी तरह से हिंदी में पत्रकारिता नहीं कर पा रहे हैं।"

जोशी जी ने पत्रकारिता के दो महत्वपूर्ण सिद्धांत "निर्भीकता" और "निष्पक्षता" का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, "आपको विचार करना चाहिए कि क्या आज निर्भीकता और निष्पक्षता बची हुई है? पहले खबर और संपादकीय में स्पष्ट अंतर होता था, लेकिन आज यह अंतर धुंधला हो गया है।"

उन्होंने सोशल मीडिया की भूमिका पर भी चर्चा की और बताया कि कैसे सोशल मीडिया पर फैली हुई जानकारी को लोग सच मान लेते हैं, भले ही उनमें "पोस्ट ट्रुथ" की स्थिति हो। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा, "हाल ही में लोगों ने कहा कि संविधान खतरे में है, लेकिन कितने लोग संविधान को पूरी तरह समझते हैं?"

जोशी जी ने निरपेक्षता पर भी प्रकाश डाला और सवाल उठाया कि क्या हम अपने कार्य को निरपेक्ष होकर कर पा रहे हैं? उन्होंने कहा, "क्या हम एक चैनल पर खबर देखकर या एक समाचार पत्र पढ़कर अपनी राय बना सकते हैं? यदि नहीं, तो पत्रकारिता कैसे निरपेक्ष हो सकती है?"

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि समाज सत्य की खोज में लगा हुआ है, लेकिन हर किसी का अपना सत्य है। उन्होंने कहा, "पहले समाचार पत्रों की विश्वसनीयता सरकार के गजट के बराबर होती थी, लेकिन आज ऐसा नहीं है। हिट एंड रन आधारित पत्रकारिता हमारे जीवन का हिस्सा बन गई है। इसके

लिए ना तो सिर्फ पत्रकार जिम्मेदार हैं और ना ही पाठक, बल्कि यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।"

जोशी जी ने सोशल मीडिया पर फैली नकारात्मक चीजों के बीच से सकारात्मक खबरों और विषयों के चयन की चुनौती पर चर्चा की। उन्होंने कहा, "आज समाज पतन की ओर जा रहा है और इसका परिणाम घातक हो सकता है। हमें विचारों की सच्चाई को ढूंढने और उसकी जरूरत को समझने की आवश्यकता है।"

श्री अशोक टंडन – प्रख्यात पत्रकार, सदस्य प्रसार भारती – ने अपने समापन भाषण में सभी अतिथियों और वक्ताओं के विचारों का सार प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, "आज के कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों ने पत्रकारिता के महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार साझा किए हैं। यह विषय भविष्य के लिए भी विचारणीय है।"

टंडन जी ने सत्र के दौरान व्यक्त किए गए महत्वपूर्ण बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया और बताया कि कैसे इन विचारों से भविष्य की पत्रकारिता को दिशा मिल सकती है। उन्होंने कहा, "आज के कार्यक्रम में जो बातें कही गई हैं, वे अनुभव पर आधारित हैं और पत्रकारिता के लिहाज से महत्वपूर्ण हैं।"

श्री श्याम परांडे – कार्यक्रम के अंत में श्याम परांडे जी ने सभी वक्ताओं और उपस्थित दर्शकों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा, "कार्यक्रम के अध्यक्ष अशोक जी, मुख्य अतिथि सच्चिदानंद जोशी जी, और बीज वक्ता आलोक जी, आप सभी का इस व्याख्यान के लिए धन्यवाद।" उन्होंने सभागार में उपस्थित सभी लोगों का भी आभार व्यक्त किया और इस महत्वपूर्ण विषय पर विचार-विमर्श के लिए उनकी सराहना की।

इस व्याख्यानमाला के द्वितीय सत्र में हिंदी पत्रकारिता के अवसरों और चुनौतियों पर गहन विचार-विमर्श हुआ। सत्र के दौरान वक्ताओं ने पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर चर्चा की, जिसमें ग्रामीण पत्रकारिता, सोशल मीडिया की भूमिका, पत्रकारिता के सिद्धांत, और हिंदी पत्रकारिता की मौजूदा स्थिति पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया। यह सत्र पत्रकारिता के छात्रों, पेशेवरों और आम जनों के लिए अत्यंत शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक रहा।

THE ROLE OF YOUTH DIASPORA IN PRESERVING AND PROPAGATING TAMIL CULTURE, TRADITION, AND HERITAGE GLOBALLY

The Diaspora Research and Resource Center (DRRC) of Antar Rashtriya Sahayog Parishad (ARSP) successfully hosted the 25th episode of Dialogue with Diaspora at Pravasi Bhawan on August 24, 2024. Focusing on the Tamil-speaking diaspora, the hybrid event was attended by over 150 participants from across the globe, exploring the central theme: "The Role of Youth Diaspora in Preserving and Propagating Tamil Culture, Tradition, and Heritage Globally."

In opening remarks, Ambassador R. Dayakar, Chairperson of DRRC, highlighted the Tamil diaspora's significant contribution to preserving and promoting Tamil culture worldwide. He emphasized Tamil's status as one of the world's oldest languages and its rich culture spread particularly across Southeast Asia. Ambassador Dayakar highlighted the resilience of Tamil communities in upholding cultural and religious practices among the challenges of globalization. He suggested coordinated efforts to engage youth in preserving heritage through education and community initiatives.

ARSP President, Ambassador Virendra Gupta, welcomed participants and highlighted the importance of the global Indian diaspora, which is around 35 million, and emphasized the need to study specific linguistic diasporas, such as Tamil diaspora, to understand their global influence better. He suggested that the state governments engage more actively in foreign policy, especially in countries with linguistic and cultural connections to Indian states.

Reflecting on ARSP's 60-year legacy, Secretary General Shri Shyam Parande praised the enthusiastic participation of Tamil diaspora and reaffirmed ARSP's commitment to including more people in future events. Shri Parande highlighted the importance of promoting Indian languages, including Tamil, through

initiatives like the Antarrashtriya Bhasha Kendra, and suggested adopting successful strategies used in promoting Hindi to support Tamil language preservation efforts.

Swamy Umapati Sivacharya Ji, a spiritual leader from Mauritius, traced the Tamil community's long history in the region, dating back to 1721. He credited Tamil organizations and the government for supporting cultural initiatives like Tamil language centers and schools, which have been instrumental in maintaining the community's cultural identity. Swamy Ji emphasized the importance of spiritual guidance for younger generations and urged for continuous cultural exchanges via digital platforms to sustain the Tamil heritage.

Thiru S. Mohan, Managing Director from Singapore, addressed concerns over the declining use of the Tamil language among Singaporean youth, despite its constitutional recognition and government support. He called for new efforts to bridge the gap between older and younger generations to ensure Tamil culture continues to thrive in Singapore.

Representing Sri Lanka, Thiru V. Shanthakumar, Assistant Director of Education in Nuwara Eliya, stressed the commitment of diaspora youth to preserving Tamil culture, often outstanding efforts within Sri Lanka itself. He noted the key role youth play in organizing cultural events and promoting traditional arts and he urged the use of technology and collaboration with host countries to further these efforts.

Thirumati Pon Kogilam, a Program Producer at Radio Television Malaysia (RTM), discussed the role of Tamil youth in Malaysia in preserving their cultural heritage,



citing the 528 Tamil schools in the country as vital hubs for cultural learning. She also acknowledged the active digital engagement of Tamil youth on social media, helping to spread Tamil traditions and values globally.

Thiru S. Murugan Thevar, a prominent figure from Myanmar's Tamil community, described the deep historical and cultural connections between the Tamil diaspora and Myanmar. Despite the region's political challenges, he expressed optimism about the youth's efforts to sustain Tamil heritage through traditional festivals and Tamil education.

In concluding remarks, Shri Narayan Kumar, Honorary Director of ARSP, emphasized the importance of preserving Indian languages like Tamil as vital elements of cultural identity. He stressed that the survival of these languages depends on passing them to younger generations. Shri Kumar proposed regular events to reinforce cultural ties and support diaspora communities in their preservation efforts.

The "Dialogue with Diaspora" event reaffirmed the crucial role of youth in safeguarding Tamil culture and heritage across the globe. Through educational initiatives, cultural exchanges and the strategic use of digital platforms, the event concluded with a clear call for collaborative efforts to ensure the vibrancy of Tamil traditions for future generations. ■

ARSP ORGANISED INSIGHTFUL DISCOURSE ON INDIA-BANGLADESH BILATERAL RELATIONS



Left to Right - Dr. Sreeradha Datta, Amb. Veena Sikri, Amb. Virendra Gupta, Dr. Markandey Rai and Prof. Smruti Pattanaik

The Antar Rashtriya Sahayog Parishad (ARSP) organized a roundtable conference on 01 May 2024, at Paravsi Bhawan to discuss the bilateral relations between India and Bangladesh. This event brought together ARSP members and a group of scholars who participated both physically and virtually, creating a platform for meaningful discussions on the evolving dynamics between the two neighboring countries.

The session began with Dr. Markandey Rai, Chairperson of ARSP's Foreign Affairs Committee, welcoming the panelists and providing a comprehensive overview of the historical, cultural, economic and linguistic ties between India and Bangladesh. Dr. Rai emphasized India's critical role in the Bangladesh Liberation War of 1971, which laid the foundation for the enduring bond between the two nations.

Dr. Sreeradha Datta, a Professor at the Jindal School of International Affairs, talked about the strong partnership between India and Bangladesh. She mentioned the 2010 agreement between the two countries, which allowed for economic cooperation, transit and transportation. Dr. Datta also discussed India's \$7.8 billion line of credit to Bangladesh, which is the largest financial assistance given to any neighboring country. She

highlighted Bangladesh's Prime Minister Sheikh Hasina's efforts in strengthening bilateral relations, particularly in resolving issues related to the Ganges and Teesta water treaties and security concerns. Dr. Datta commended the current state of relations but urged both governments to ensure the implementation of pending projects in energy, communication and transportation.

Ambassador Veena Sikri, Vice Chairperson of the South Asia Foundation, spoke at the event and highlighted the strong historical trust between India and Bangladesh, particularly during Bangladesh's liberation war. She emphasized India's role as a trusted partner for Bangladesh. Ambassador Sikri addressed challenges related to security and connectivity and stressed the importance of overcoming obstacles to implement existing agreements. She expressed concerns about the ongoing border killings, which have led to negative sentiments in Bangladesh and cautioned about China's increasing influence in the region, emphasizing the need for vigilance without overreaction.

Prof. Smruti Pattanaik from the Manohar Parrikar Institute for Defense Studies and Analyses added to the discussion by highlighting

India's geographical importance and its role in the 1971 Bangladesh Liberation War. She addressed the issue of misconceptions regarding India in Bangladesh and emphasized the need to create effective counter-narratives, particularly concerning border killings.

Ambassador Virendra Gupta, President, ARSP – As chair of the program, concluded the session by highlighting important issues. He mentioned the ongoing challenges faced by Hindu minorities in Bangladesh, regardless of any government and referred to data showing a decline in the Hindu population since 1945.

Ambassador Gupta also addressed the lack of trust between Bangladesh and India, emphasizing that India is not seeking to dominate the region and has worked to clear up misunderstandings. He suggested reevaluating India's approach. Additionally, he discussed China's influence in the region, advising caution without overreacting.

The workshop reaffirmed ARSP's commitment to fostering international cooperation. It emphasized the importance of addressing unresolved issues, strengthening economic cooperation, and enhancing people-to-people relations between India and Bangladesh. ■

CURRENT SITUATION IN BANGLADESH



On August 20, 2024, Antar Rashtriya Sahayog Parishad (ARSP) organized a meeting at Pravasi Bhawan to discuss the current political situation in Bangladesh. The focus was on the removal of Prime Minister Sheikh Hasina, violence against minority communities, particularly Hindus and the broader regional stability issues. ARSP members, concerned citizens and experts, including online participants, took part in the event. The meeting highlighted the escalating political instability following Hasina's resignation and departure to India.

In his welcome address Dr. Markandey Rai, Chairman of the Foreign Affairs Committee at ARSP, highlighted the collapse of law and order in Bangladesh. He focused on the political changes following her resignation, the possibility of foreign involvement and the impact on India's border security and economic relations. Dr. Rai shows concerns about violence against Hindu minorities. He emphasized the importance of India holding diplomatic talks with Bangladesh, enhancing border security, providing humanitarian aid to Hindu minorities and promoting public awareness for a peaceful resolution.

President of ARSP, Ambassador Virendra Gupta expressed concerns about the instability in Bangladesh, emphasizing the risks it poses for

India's security and economic stability. He highlighted the potential disruption of trade relations and regional financial stability due to the unrest. Ambassador Gupta stressed the importance of trust and people-to-people relations between India and Bangladesh, cautioning against relying solely on a government-to-government approach. He also raised concerns about the role of Sheikh Hasina and external influences, suggesting that these factors need to be carefully examined when formulating India's strategy toward the crisis.

Ambassador Veena Sikri, Vice Chairperson of the South Asia Foundation - an expert on South Asia, thoroughly analyzed political and social unrest in Bangladesh. She explained that student protests have played an important role in Bangladesh's politics, historically supporting the ruling Awami League. However, recent protests have expanded to express broader dissatisfaction with the government, particularly regarding the quota system in public sector jobs. Sikri also warned about the potential for a coup led by Jamaat-e-Islami, possibly with support from external forces such as Pakistan and the United States. She highlighted Bangladesh's deep economic crisis, worsened by corruption and mismanagement. Sikri called for India and the international community to support

stability and democracy in Bangladesh while navigating the complex dynamics of the crisis carefully.

Professor Smruti Pattanaik, a senior research fellow at MP-IDSA, analyzed Bangladesh's political movements, especially the role of student groups. She noted that while Islamic Chhatra Shibir remains active, Chhatra Dal has declined in influence. Pattanaik also discussed the army's role in maintaining stability and the possibility of greater military involvement in politics. She highlighted public distrust in the judiciary and its close ties with the government, which has fueled ongoing protests.

The session concluded with a question-and-answer, where participants, including Shri Sanjay Bhalla, Vice President of ARSP, shared their perspectives. Shri Bhalla expressed concern over the growing violence targeting the Hindu minority and emphasized the urgency of addressing the political and humanitarian crisis in Bangladesh. His remarks provided a deeper understanding of the human impact of the unrest, sparking meaningful dialogue among the participants.

The discussion underscored the need for strategic engagement with Bangladesh to foster stability, protect vulnerable communities, and safeguard regional peace. ■

FELICITATION OF DELEGATES OF 75TH KNOW INDIA PROGRAMME

On July 24, 2024, the Diaspora Research and Resource Centre (DRRC) of Antar Rashtriya Sahayog Parishad (ARSP) hosted a felicitation cum engagement event for the delegates of the 75th Know India Programme (KIP) at Pravasi Bhavan. This batch brought together 39 delegates from nine countries: Fiji, Mauritius, Trinidad and Tobago, Guyana, Myanmar, South Africa, Suriname, Malaysia, and New Zealand. The event started with opening remarks from Prof. Gopal Arora, Secretary of ARSP, expressing gratitude to the Ministry of External Affairs for the opportunity to interact with the KIP delegates. Prof. Arora provided an overview of ARSP and DRRC, emphasizing their mission and the significance of their motto, "Vasudhaiva Kutumbakam" (The World Is One Family).

In his address, **Ambassador Virendra Gupta**, President of ARSP, highlighted the importance of KIP in engaging with the youth of the Indian diaspora. He elaborated on ARSP's role in strengthening ties with the young Indian diaspora worldwide. Drawing on his experiences as posted in Trinidad and Tobago and South Africa, Ambassador Gupta discussed the emotional bonds the people of Indian origin maintain with India. He also highlighted India's pride in the global accomplishments of its diaspora and the role of cultural connections.

Shri Shyam Parande, Secretary General of ARSP, shared insights from his travels to Fiji and Mauritius and discussed the impact of air pollution in Indian cities like Delhi and Mumbai. He concluded by reaffirming India's soft power and the "Vasudhaiva Kutumbakam" principle, which views humanity as one family.

H.E. Dr. Roger Gopaul, High Commissioner of Trinidad and Tobago, engaged with the delegates, encouraging them to embrace and celebrate Indian heritage. Dr. Gopaul urged participants to explore India's deep and diverse cultural history.

H.E. Mr. Jagannath Swami, High

Commissioner of the Republic of Fiji, urged delegates to balance modernization with environmental preservation and congratulated them for participating in the program. Mr. Swami shared insights into the history of the Indian diaspora in Fiji, where Indian culture has been maintained for over a century. He stressed the role of youth in shaping the future.

Mr. Jaysen K. Ramasamy, Deputy High Commissioner of Mauritius, spoke about the Know India Programme's role in facilitating cultural and educational exchanges. Mr. Ramasamy noted the strong ties between Mauritius and India, including recent collaborations on generic medicines. He encouraged delegates to share their experiences upon returning home and emphasized the role of diaspora in strengthening ties between the two nations.

Mrs. Thin Pyant Thida Kyaw, Deputy Chief of Mission of Myanmar, said about the strong geographical and cultural connections between India and Myanmar. She expressed gratitude for the invitation and emphasized the importance of cultural exchange in nurturing mutual understanding. Mrs. Kyaw underlined the shared religious and linguistic heritage that unites both nations.

Mr. Hanani Ben Lewi, Second Secretary at the Embassy of Guyana, reflected on the historical ties between Guyana and India, emphasizing the influence of Indian culture on the Caribbean region since the arrival of indentured laborers.

Ambassador R. Dayakar, Chairperson of DRRC, spoke about the Know India Programme, which was initiated in December 2003. He commended the rigorous selection process and congratulated the delegates for their achievement. He discussed the evolution of India's



diaspora engagement policy in 2001 when the high-level committee was constituted by Vajpayee's Government on the suggestion of Shri Baleshwar Agrawal, Former Secretary General of ARSP.

Dr. Rajiv Khurana, CMC, FIMC, led a workshop on "Clean Air and Youth." Dr. Khurana highlighted the importance of clean air and provided detailed data on air quality in various cities across India and abroad. Dr. Khurana emphasized that while humans can survive without food for 21 days and water for five days, survival without air is only possible for about 3 minutes. He offered practical advice on maintaining clean air, highlighting the urgent need for awareness and action. The interactive session with the KIP delegates underscored the program's success in reconnecting participants with their cultural heritage and providing insights into India's progress. Delegates shared their experiences from visits to Bihar, including Nalanda University and Bodh Gaya, and discussed traditional rituals and customs of their host countries. They admired India's achievements in economic growth, education, and women's empowerment.

In concluding remarks, Shri Narayan Kumar, Honorary Director of ARSP, highlighted his connections to various diaspora countries, tracing the history of indentured labor and its contributions to the development of their respective countries. Shri Kumar mentioned the contribution of Mahatma Gandhi in abolition of indentured system.

The event was a significant milestone for the Know India Programme, fostering cross-cultural dialogue and strengthening global ties. ■

INDIA-BHUTAN RELATIONS



Left to Right – Dr. Markandey Rai, Shri Shyam Parande, Amb. Virendra Gupta & Prof. Rajesh Kharat

Antar Rashtriya Sahayog Parishad (ARSP) hosted a roundtable conference on India-Bhutan bilateral relations at Paravsi Bhawan on June 05, 2024, attracting luminaries and scholars to discuss the multifaceted relationship between India and Bhutan. The workshop, chaired by Ambassador Virendra Gupta, the President of ARSP, brought together a panel of distinguished speakers to provide insights into this important partnership's strategic, economic, cultural, and diplomatic aspects.

Dr. Markandey Rai, Chairperson of the Foreign Affairs Committee at ARSP, set the tone for the event with a warm welcome and a thorough introduction of the panelists. In his eloquent opening remarks, Dr. Rai vividly depicted the historical, cultural, economic, and linguistic ties between India and Bhutan, underscoring India's pivotal role as a neighbor. He illuminated the contemporary issues and ongoing projects initiated by the Indian government, all aimed at fortifying this crucial bilateral relationship.

Professor Rajesh Kharat, School of International Relations, JNU - discussed Bhutan's strategic significance for India, emphasizing the need to maintain and strengthen the relationship for regional security. He highlighted Bhutan's role as a buffer state between India and China and stressed the importance of supporting Bhutan's sovereignty. Additionally, he emphasized the potential for enhanced cooperation in education, tourism and cultural

exchange between the two countries and the need to foster people-to-people connections. Kharat also expressed concerns about the impact of restrictive tourism policies on these connections and urged India and Bhutan to explore new avenues for strengthening people-to-people ties.

Professor Smruti Pattanaik from MPIDSA analyzed the economic ties between India and Bhutan, highlighting strong trade and investment links. India is Bhutan's top trading partner and a major investor in its hydropower sector. Concerns were raised about Bhutan's increasing indebtedness to India, emphasizing the need to diversify economic engagement by involving other regional partners such as Bangladesh. The focus was on balancing India's financial interests with Bhutan's long-term development goals for a mutually beneficial relationship.

Shri Shyam Parande, Secretary-General, ARSP, highlighted the deep-rooted cultural ties between India and Bhutan, particularly in Buddhism. He stressed the need to address sensitive cultural issues, such as the impact of Westernization on Bhutanese society and the preservation of traditional values. Shri Parande noted that the cultural exchange between the two countries has been a cornerstone of their relationship, and he emphasized the importance of continued efforts to strengthen these linkages through educational exchanges, tourism and other people-to-people initiatives.

Ambassador Virendra Gupta emphasized respecting Bhutan's sovereignty and acknowledging its increasing assertiveness in foreign policy. He noted the challenges posed by China's growing presence in the region and Bhutan's efforts to balance its relations with India and China. Gupta stressed the importance of maintaining trust and open communication between India and Bhutan as Bhutan navigates its evolving international relations. He also highlighted the need for India to be sensitive to Bhutan's concerns and to work collaboratively to address any emerging issues or tensions in the relationship.

During the workshop, many ARSP office bearers, members, students and faculties, including prominent individuals such as Shri Sanjay Bhalla, Shri Narayan Kumar, Shri Amit Gupta, Professor Amarjiva Lochan, Shri Anil Joshi, and Dr. Rutuja, participated in open question and answer sessions. They discussed various valuable points, emphasizing the need for a nuanced and sensitive approach to address the evolving dynamics of the India-Bhutan relationship. The participants highlighted the importance of maintaining trust, respecting Bhutan's sovereignty, and exploring new avenues for mutually beneficial cooperation. The workshop provided a valuable platform for experts, policymakers, and stakeholders to engage in constructive dialogue and identify key priorities for strengthening the India-Bhutan relationship in the years to come. ■

ARSP New Life Members

Shri Vijay Kumar Malhotra
Former Director (Hindi),
Ministry of Railway,
WW-67-IF, Malibu Town,
Sohna Road, Gurugram - 122018
(M) 9918029919
malhotravk@gmail.com



Shri Shahzad Ahmad Ansari
Retd. Executive Engineer MCD,
D-9, Nangal Dewat, Vasant Kunj,
New Delhi-110 070
(M) 9899729786, 9717787190
sanikkimcd@gmail.com



Shri Vinod Kumar Sandlesh
Retd. Government Servant,
Sector- E-2, H. No. F4/03 (GF),
DDA HIG Flats, Vasant Kunj
New Delhi-110 070
(M) 9868731582
vsandlesh@gmail.com



Dr. Aditi Narayani
Assistant Professor-DU,
B-1531, Vasant Kunj Enclave,
B Block, South West,
New Delhi-110 070
(M) 9650144604
narayaniaditi26@gmail.com



Smt. Shail Bisht
Retd. Lecturer,
396/2-1, Haridwar Road,
Dharam Pur,
Dehraudun-248001
(M) 9412155046



Shri R. K. Bakshi
Management Course in Top
Inst. of India
19, Tyagi Road, Dehradun-248 001
(M) 9837109454
rkbakshi09@gmail.com



Kumari Niyati Kothiyal
Student,
192/2, Vasant Vihar,
Dehradun-248 006
(M) 9410902188
niyatikothiyal723@gmail.com



Shri B. L. Kothiyal
Commandand(Retd.)GOI
74, Vijay Park, Ballupur Road,
Dehradun-248 001
(M)9411514917, 7895764314



Col. Ajay Kothiyal
Retd. Army Officer,
192/2, Vasant Vihar,
Dehradun-248 006
(M) 9411767949
kothiyalajay@gmail.com



Dr. Subrato Guha
Prof. in English,
Indore Christian College,
7, Manoramaganj, Indore-452 001
(M) 9826824945
sguha2012@yahoo.in



Prof. Deepak Dubey
College Teaching
Indore Christian College,
A-85, Sudama Nagar,
Narendra Tiwari Marg,
Indore-452 009
(M) 9826012640
dubeydr7@gmail.com



Dr. Sunita Joshi
Retd. Prof. DAVV,
04, Ahilya Puri, 2,
MIG Residency Area,
Indore-452 001
(M) 9993557017
joshisunita0007@gmail.com



Dr. Dharam Vir Singh
Retd. Govt. Officer Diplomat,
B-702, Durga Pooja Apts.,
Sector-13, Plot No. 08, Dwarka,
New Delhi-110 078
(M) 9354129872
dv_singh@hotmail.com



Shri Pavan Kumar Chawla
Business, Manufacturing, Medical,
C-50, Rajouri Garden,
New Delhi-110 027
(M) 9810007520
pavan@marvelvinyls.com



Shri Vijay Kumar Sethi
Self Employed(Pharma Industry),
G19/5A, 1st Floor,
Rajouri Garden,
New Delhi-110 027
(M) 9810410498, 7827577414
vijaykumarsethi9@gmail.com



Shri Narender Kumar Tuli
Business,
B-97, Sector-41,
Noida-201 303
(M)9350171722
ntuli12@gmail.com



Shri Bhaskar Bikram Chetia
Social Work,
2050, MAGNOLIA,
Gaur Saundaryam, Noida Ext.
Uttar Pradesh-201 301
(M) 8638457588
bhaskarbikram@gmail.com



Smt. Shakuntala Chandola
21/12A, E.C. Road, Shiva Enclave,
Dehradun-248 001
(M) 8755126001
chandola_dn@rediffmail.com



Shri Jitendra Mohan Bahuguna
Retd. Govt. Service,
Flat No. A2, Blessing Apartment,
Phase-I, Block-B, Om City,
Pathribagh, Dehradun-248 001
(M) 8979105480



Shri Ashok Garg
Business,
202, R.R. Apartment, Naishvila Road,
Dehradun-248 001
(M) 9917718999



Smt. Prabha Sharma
4/7, General Wing, Prem Nagar,
Dehradun-248 007
(M) 931992327
ashoksharmaddon@gmail.com



Smt. Suchitra Nautiyal
Teaching,
11, Van Vihar, Ballupur,
Dehradun-248 001
(M) 9634233756



Smt. Nivedita Baunthiyal
Actor, Director, Writer,
97/6, Anand Vihar, Dharampur,
Opp. LIC Building,
Dehradun-248 001
(M) 9820962933
niveditabaunthiyal@gmail.com



Shri Abhishek Bourai
IT Professional,
95, Block-H, Divya Vihar,
Danda Dharampur,
Dehradun-248 001
(M) 9557776935
abhisekh.bourai99@gmail.com



Shri G. S. Rana
Retd. Bank Executive,
636, Mayapuri, Kumar Gali,
'B' Block, Ajampur Kalan,
Dehradun-248 001
(M) 9962248327
gswana.iob@rediffmail.com



LYONPO D.N. DHUNGYEL, MINISTER FOR FOREIGN AFFAIRS AND EXTERNAL TRADE OF BHUTAN, ATTENDED THE SECOND BIMSTEC FOREIGN MINISTERS' RETREAT IN DELHI ON 11TH JULY 2024.



Lyonpo D.N. Dhungyel, Minister for Foreign Affairs and External Trade of Bhutan, attended the Second BIMSTEC Foreign Ministers' Retreat in Delhi on 11th July 2024.

The BIMSTEC Foreign Ministers' Retreat provides an opportunity for the Foreign Ministers of BIMSTEC member countries to discuss avenues to broaden and deepen cooperation under the BIMSTEC

framework. The retreat is a precursor to the upcoming BIMSTEC Summit scheduled to be held in Thailand in September 2024.

During the retreat, the Foreign Ministers discussed ways to strengthen cooperation in the fields of trade, food security, connectivity, cultural exchanges and people to people contact among other areas. Lyonpo D.N. Dhungyel highlighted

the opportunities for collaboration among BIMSTEC member countries in the areas of economic development, tourism, and cultural exchanges.

While in Delhi, Lyonpo called on the Prime Minister Shri Narendra Modi and also met with the External Affairs Minister Dr. S Jaishankar.

SHRI VIKRAM MISRI TRAVELED TO BHUTAN ON HIS FIRST TRIP ABROAD AS FOREIGN SECRETARY





Bhutan-India development projects implemented under the 12th FYP and the two Foreign Secretaries virtually inaugurated 19 schools in Bhutan, which were constructed during the 12th FYP period. During the Plan Talks, the Bhutanese side presented the Project Tied Assistance (PTA) proposals as well as the first tranche of the PTA projects to be implemented during the 13th Five-Year Plan period. A total of 61 projects amounting Nu 49.58 billion (Rs 4,958 crore), covering sectors such as connectivity, infrastructure, energy, skill development, education, health, and cultural heritage were approved by the two sides. ■

At the invitation of Foreign Secretary of Bhutan, Aum Pema Choden, Foreign Secretary Shri Vikram Misri paid an official visit to Bhutan from 19 to 20 July 2024. This was his first visit abroad as Foreign Secretary. During the visit, Foreign Secretary Misri received an audience with His Majesty The King, and called on Prime Minister Dasho Tshering Tobgay and Minister for Foreign Affairs and External Trade D.N. Dhungyel.

Foreign Secretary Misri co-chaired the 3rd India Bhutan Development Cooperation Talks of the 13th Five Year Plan (FYP) of Bhutan with Foreign Secretary Pema Choden. The two sides expressed satisfaction at the large number of



DIPLOMATIC POSTINGS

Shri Parvathaneni Harish (IFS:1990), presently Ambassador of India to Germany, has been appointed as the **next Ambassador/ Permanent Representative of India to the United Nations at New York.**

Shri Puneet Roy Kundal (IFS:1996), presently Additional Secretary in the Ministry, has been appointed as the **next Ambassador of India to Portugal.**

Shri Baisnab Charan Pradhan (YOA:2007), presently Deputy Chief of Mission, Embassy of India, Brasilia, has been appointed as the **next High Commissioner of India to the Republic of Sierra Leone.**

Shri Mridu Pawan Das (IFS:2004), presently Joint Secretary in the Ministry, has been appointed as the **next High Commissioner of India to the Republic of Rwanda.**

Shri Vinay Mohan Kwatra has been appointed as the **next Ambassador of India to the United States of America.**

Shri Subhash Prasad Gupta (IFS:2006), presently Deputy Chief of Mission in the Embassy of India, Hanoi, has been appointed as the **next Ambassador of India to the Republic of Suriname.** ■

श्री बालेश्वर अग्रवाल जी की 103वीं जयंती का आयोजन

17 जुलाई 2024 को अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद (ARSP) प्रवासी भवन में अपने संस्थापक महासचिव श्री बालेश्वर अग्रवाल जी की 103वीं जयंती के अवसर पर एक भाव-भीनी श्रद्धांजलि की गई। इस महत्वपूर्ण अवसर पर, ARSP के विभिन्न पदाधिकारी, सदस्य एवं कर्मचारी एकत्रित हुए, जिन्होंने अग्रवाल जी की स्मृति में माल्यार्पण कर उनके योगदान को नमन किया।



कार्यक्रम में ARSP के अध्यक्ष राजदूत वीरेंद्र गुप्ता, सचिव प्रो. गोपाल अरोड़ा, मानद निदेशक श्री नारायण कुमार, वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी, श्री अतुल प्रभाकर, श्री विनयशील चतुर्वेदी और श्री संतोष मिश्रा जैसे प्रमुख गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सभी ने मिलकर अग्रवाल जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की और उनके द्वारा स्थापित संगठन के प्रति उनके अटूट समर्पण और योगदान को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया।

श्री बालेश्वर अग्रवाल जी की जीवन यात्रा और उनके दूरदर्शी नेतृत्व को इस अवसर पर विशेष रूप से याद किया गया। ARSP के

प्रति उनका योगदान न केवल संगठन की बुनियादी नींव रखने तक सीमित था, बल्कि उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद और सांस्कृतिक कूटनीति के क्षेत्र में भी अद्वितीय योगदान दिया। उनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप, ARSP आज वैश्विक स्तर पर प्रभावी रूप से कार्य कर रहा है और उनकी दूरदृष्टि संगठन की निरंतर सफलता का प्रमुख आधार बनी हुई है। इस अवसर ने उनके विचारों और कार्यों की महत्ता को एक बार फिर

से उजागर किया, जो आज भी संगठन को प्रेरित करते हैं और उसकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने न केवल श्री बालेश्वर अग्रवाल जी के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की, बल्कि उनके सिद्धांतों और आदर्शों को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता भी जताई, जिससे ARSP की परंपरागत मूल्य और वैश्विक दृष्टिकोण सशक्त होते रहेंगे।

प्रवासी संवाद श्रृंखला में वरिष्ठ साहित्यकारों का संवाद कार्यक्रम

15 जुलाई 2024 को डायस्पोरा रिसर्च एण्ड रिसोर्स सेंटर – अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद और वैश्विक हिन्दी परिवार के तत्वाधान में अंतरराष्ट्रीय भाषा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रवासी संवाद श्रृंखला के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित साहित्यकार यशपाल जी के सुपुत्र श्री आनंद (वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार, कनाडा) और वरिष्ठ साहित्यकार प्रदीप पंत समेत अन्य विद्वानों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत औपचारिक परिचय के साथ हुई। स्वागत अभिनंदन के क्रम में मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता श्री श्याम परांडे (महासचिव, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद) ने श्री अतुल प्रभाकर जी को अंगवस्त्र और स्मृतिचिह्न प्रदान कर स्वागत किया गया। श्री श्याम परांडे जी ने भारतीय संस्कृति के प्रसार में हिन्दी भाषा के योगदान पर विचार व्यक्त किया। दूरस्थ संचार माध्यम से श्री वीरेंद्र गुप्ता (अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद) ने प्रवासी संवाद श्रृंखला के महत्त्व और विदेशों में हिन्दी के विकास में प्रवासी लेखकों के योगदान को

रेखांकित किया। श्री अतुल प्रभाकर जी ने श्री विष्णु प्रभाकर जी और यशपाल जी से जुड़े संस्मरणों और उनके रचना संसार पर प्रकाश डाला।

मुख्य वक्ता श्री आनंद जी ने भारतीय और प्रवासी रचनाकारों के साथ-साथ अमेरिकी और अन्य प्रवासी रचनाकारों की दशा और दिशा पर विचार करते हुए कहा कि उत्तर अमेरिका में बसे भारतीय प्रवासियों की विशिष्टता को उजागर किया। उन्होंने कनाडा में फ्रेंच और अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में सीमित ज्ञान पर चिंता व्यक्त की।

कार्यक्रम में श्री नारायण कुमार (मानद निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद) ने अपने वैश्विक अनुभवों को साझा करते हुए हिन्दी और भारतीय संस्कृति की वैश्विक स्वीकार्यता पर बल दिया। श्री अनिल जोशी (अध्यक्ष, वैश्विक हिन्दी परिवार) ने विश्व भर में हिन्दी के प्रचार, प्रसार और विकास में सुधी साहित्यकारों



की भूमिका को रेखांकित किया और कनाडा में श्री आनंद जी द्वारा हिन्दी साहित्य के अनुवाद और उसकी उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री प्रदीप पंत जी ने स्वर्गीय यशपाल जी के जीवन और रचना प्रक्रिया पर रोचक और प्रामाणिक तथ्य साझा किए, साथ ही उनके प्रारंभिक जीवन और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को भी स्मरण किया। अंत में, उपस्थित जनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर श्री आनंद जी ने दिया। कार्यक्रम का आरंभ श्री विनयशील जी द्वारा और संचालन श्रीमती जसविंदर कौर विद्वा द्वारा किया गया।

प्रवासी साहित्यकारों के योगदान को समझना और मान्यता देना अत्यंत आवश्यक है - श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक'



10 अगस्त 2024 को प्रवासी भवन में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद और वैश्विक हिन्दी परिवार के संयुक्त तत्वाधान में अंतरराष्ट्रीय भाषा केन्द्र ने एक भव्य 'संवाद और सम्मान कार्यक्रम' का आयोजन किया। यह आयोजन प्रवासी साहित्यकारों की कृतियों और उनके योगदान को मान्यता देने और उन्हें सम्मानित करने के लिए किया गया था।

इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार, उपस्थित थे। श्री पोखरियाल ने प्रवासी लेखिका सुश्री शैल अग्रवाल और श्री मनीष पाण्डेय के साहित्यिक योगदान की सराहना की। उन्होंने विशेष रूप से सुश्री अग्रवाल के लेखन की प्रशंसा की और यह भी कहा कि हिंदी में लेखन कर रहे प्रवासी साहित्यकारों के योगदान को समझना और मान्यता देना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने दोनों मेहमानों के साहित्य में भारत के प्रति उनकी गहरी लगाव की भी सराहना की और भारतीय विचारधारा को विश्व स्तर पर फैलाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

डॉ. शैल अग्रवाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि ईश्वर ने हमें हृदय और मस्तिष्क दोनों इसलिए

दिए हैं ताकि हम किसी भी कार्य को करने से पहले सोच-समझ सकें। उन्होंने कहानी और कविता के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा कि कहानी में हम अपनी बातें छुपाकर रख सकते हैं, जबकि कविता हृदय की गहराइयों से उभरती है और सीधी भावनाओं को व्यक्त करती है। अपनी रचना यात्रा के बारे में उन्होंने बताया कि 1968 में 19 वर्ष की उम्र में लंदन जाने के बाद, वहाँ एक दशक तक निवास करने के बाद भारत लौटने का विचार था। हालांकि, परिस्थितियों के कारण उन्हें पुनः लंदन लौटना पड़ा और उन्होंने वहीं स्थायी निवास का निर्णय लिया।

कार्यक्रम में उपस्थित श्री मनीष पाण्डेय, जो पेशे से कंप्यूटर इंजीनियर हैं और अमेज़ॉन में कार्यरत हैं, ने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि उनकी लेखन यात्रा में उनके गुरु श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्विक हिन्दी परिवार उनके लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण मंच है। उन्होंने कहा कि व्यवसाय की वजह से विभिन्न भाषाओं में संवाद करना पड़ता है, लेकिन हिन्दी उनके लिए मां से बात करने की भाषा है। उन्होंने प्रवासी जीवन की भावनात्मक जड़ों को भी साझा किया और कहा कि विदेश

में बसे प्रवासी लोग भारत को अपने ससुराल में रहने वाली बेटा की तरह मानते हैं।

इस कार्यक्रम में साहित्य जगत की कई प्रमुख हस्तियाँ भी उपस्थित थीं। श्री श्याम परांडे, श्री नारायण कुमार, श्री अनिल जोशी, डॉ. विमलेश कांति वर्मा, श्री नरेश शांडिल्य, और सुश्री अलका सिन्हा जैसे प्रमुख व्यक्तियों के अलावा, लंदन से पधारे शैल जी के परिजन, अतुल प्रभाकर, श्रीमती ममता किरण, श्रीमती सरोज शर्मा, प्रसून लतांत, कवि ओम सपरा, श्री रामचंद्र, श्री संतोष मिश्र, डॉ. राजेश गौतम, श्री राजेश माँझी, डॉ. विजय कुमार, और सुश्री बालकीर्ति जैसे साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

वर्चुअल माध्यम के जरिए कार्यक्रम में श्री विनयशील चतुर्वेदी, डॉ. जयशंकर यादव, डॉ. हर्षवर्धन आर्य के अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक और शोधार्थी, तथा कई अन्य गणमान्य विद्वान और विदुषी भी शामिल हुए। कार्यक्रम की सफलता इस बात को दर्शाती है कि साहित्य और भाषा के प्रति प्रेम और सम्मान ने सभी को एक साझा मंच पर लाकर एक अद्भुत सांस्कृतिक मिलन का अवसर प्रदान किया।

ब्रिटेन के हिन्दी शिक्षार्थियों और शिक्षकों का सम्मान समारोह और संगोष्ठी भारत में आयोजित



अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के तत्वावधान में वैश्विक हिन्दी परिवार द्वारा एक भव्य सम्मान समारोह और संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 28 अगस्त 2024, बुधवार को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के संगोष्ठी कक्ष में आयोजित हुआ। इसका उद्देश्य भारत भ्रमण पर आए ब्रिटेन के हिन्दी शिक्षार्थियों और शिक्षकों को सम्मानित करना और हिन्दी भाषा तथा भारतीय संस्कृति के प्रति उनके उत्साह को सराहना था।

समारोह की शुरुआत सुश्री सुरेखा चोफला ने की, जो कि ब्रिटेन में हिन्दी शिक्षा प्राप्त करने वाली टीम की प्रमुख हैं। उन्होंने अपने संबोधन में ब्रिटेन में हिन्दी शिक्षण के प्रति बढ़ती रुचि, यूके हिन्दी समिति की शिक्षा पद्धति और सरकारी प्रयासों की विस्तार से चर्चा की। सुरेखा चोफला ने उल्लेख किया कि ब्रिटेन में हिन्दी सीखने वाले अधिकांश छात्र भारतीय मूल के होते हैं या वे लोग होते हैं जो भारत की सांस्कृतिक और राजनयिक महत्व को समझते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ब्रिटेन के मंदिर हिन्दी शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जो भारतीय संस्कृति के प्रति ब्रिटिश समाज की गहरी रुचि को दर्शाता है।

विशिष्ट अतिथि श्री कुमार तुहिन, जो पूर्व राजनयिक और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक रह चुके हैं, ने विदेशों में हिन्दी की उपयोगिता और प्रभावशीलता पर अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि भारतीय और विदेशी छात्रों के हिन्दी सीखने के

उद्देश्य में बहुत अंतर होता है। विदेशी छात्रों की हिन्दी सीखने की प्रेरणा भारत को निकट से जानने और समझने की होती है, जो उनकी सांस्कृतिक और राजनयिक रुचियों को प्रकट करता है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री वीरेंद्र गुप्ता, पूर्व राजदूत और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के अध्यक्ष, ने विदेशों में हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता और ब्रिटिश छात्रों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रति सुरेखा चोफला और अन्य शिक्षकों की लगन और निष्ठा वास्तव में प्रेरणादायक है और उनके योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने इस अवसर पर हिन्दी भाषा के वैश्विक प्रसार में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

श्री नारायण कुमार, मानद निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद, ने ब्रिटिश छात्रों के उत्साह और उनके विदेश प्रवास के दौरान हिन्दी के प्रति सम्मान और लगाव के संस्मरण साझा किए। उन्होंने कहा कि हिन्दी का वैश्विक प्रसार भारतीय संस्कृति के प्रति एक सहज अनुराग को दर्शाता है और यह हिन्दी भाषा की बढ़ती स्वीकार्यता का संकेत है।

इस कार्यक्रम में श्री अनिल जोशी, अध्यक्ष वैश्विक हिंदी परिवार, कवि और लेखक, ने इस तरह के आयोजनों के महत्व और उनकी उपयोगिता पर चर्चा की। उन्होंने वैश्विक हिंदी परिवार की उपलब्धियों और हिन्दी भाषा के प्रति उनके समर्पण को उजागर किया। श्री

ऋषि शर्मा, उप सचिव, हिन्दी अकादमी दिल्ली, ने हिन्दी भाषा की भाषिक महत्ता और उसकी सांस्कृतिक चेतना पर अपने विचार व्यक्त किए, जो इस आयोजन के महत्व को और भी स्पष्ट करता है।

कार्यक्रम के दौरान ब्रिटिश दल के शिक्षकों और छात्रों ने हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के गौरवगान स्वरूप काव्य पाठ और विचार प्रस्तुत किए। यह सत्र भारतीय संस्कृति और साहित्य की समृद्धि को दर्शाता है और वैश्विक दर्शकों के साथ हिन्दी के गहरे जुड़ाव को स्थापित करता है।

समारोह की शुरुआत श्री विनयशील चतुर्वेदी ने की, और कार्यक्रम संचालन की जिम्मेदारी डॉ० ओम प्रकाश ने निभाई। श्री श्याम परांडे, महासचिव अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद, ने स्वागत वक्तव्य देते हुए आगंतुक प्रतिनिधिमंडल और सभी अतिथियों का स्वागत किया। समापन सत्र में धन्यवाद ज्ञापन श्री गोपाल अरोड़ा ने किया।

कार्यक्रम में ब्रिटेन से पधारिं दिव्या माथुर के साथ डॉ० वरुण कुमार, सुश्री सरोज शर्मा, अतुल प्रभाकर, प्रसून लतांत, मनोज श्रीवास्तव, और अन्य गणमान्य विद्वान-विदुषी एवं साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे। इस आयोजन ने भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा के प्रति वैश्विक सम्मान को और भी बढ़ाया और अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।